मरीआई की गाड़ी

– अण्णाभाऊ साठे

(भारतीय समाज में देवी–देवताओं, पारम्परिक रूढ़ि–विश्वासों की बहुतायत है। अधिकांश लोग इससे ग्रस्त होते हैं। यहाँ तक कि आधुनिक शिक्षाप्राप्त लोग भी इससे अछूते नहीं रह पाते। अण्णाभाऊ साठे का विवेकवादी मस्तिष्क इस तरह के अंधविश्वासों का पुरज़ोर विरोध करता है। वे अपनी रचनाओं में इस तरह का कोई न कोई चरित्र अवश्य खड़ा करते हैं, जो पूरीतरह तर्कशील, विवेकवान और वैज्ञानिक दृष्टिसम्पन्न हो। वह आधुनिक समाज गढ़ने के लिए विवेक को पूरी ताकत के साथ स्थापित करता है और अंततः विजय भी प्राप्त करता है। यह कहानी भी ग्रामदेवता के प्रकोप के मिथ को तोड़ते हुए आधुनिक मानवताकेन्द्रित विचारों की स्थापना में समाप्त होती है। अण्णाभाऊ साठे के साहित्य में वर्ग–संघर्ष की स्पष्ट चेतना के साथ–साथ भारतीय जाति–व्यवस्था की विविधता और श्रेणीबद्धता का सूक्ष्म विवरण भी मिलता है। किसतरह अलग–अलग जातियाँ अलग–अलग वाद्य–यंत्र बजाने में सिद्धहस्त होती हैं और हरेक जाति का अपना निर्धारित वाद्य होता है, जिसके बनाने से लेकर बजाने का भी वह विशेषज्ञ होता है, इस कहानी में इस बात को देखा जा सकता है। – अनुवादक)

बारिश होने के बाद साफ धूप निकल आई थी। आसमान किसी चाँदी के थाल की तरह चमकने लगा था। बादल का एक भी धब्बा उसके चेहरे पर नहीं था। गाँव में उदासी छाई हुई थी। गलियाँ सुस्त पसरी थीं। सभी मकान साँय–साँय कर रहे थे। गाँव के बीचोबीच खड़ा पीपल भी खिन्न था।

गाँव के सभी लोग गंभीर मुखमुद्रा में चौपाल के आसपास बैठे थे। महिलाएँ और बच्चे चिंतित होकर अपने भविष्य पर विचार कर रहे थे। उनका भविष्य तराजू में दोलायमान था।

गाँव में मरीआई घुस गई थी। इसी बात पर चर्चा के लिए पूरा गाँव जमा हुआ था। उल्टी–दस्त से दस आदमी मर चुके थे। अब उनका क्या होगा? अब अगली बारी किसकी होगी? वे इसी विचार में डूबे हुए थे। चौपाल के चबूतरे पर गाँव के चार सयाने विचार–विमर्श कर रहे थे। सपाट चेहरों के साथ वे आपस में फुसफुसाते हुए बात कर रहे थे। मगर उनकी बातचीत का केन्द्र मरीआई नहीं, बल्कि ऊपरपारा का नाना था। वे चारों सयाने मरीआई से ज़्यादा भयानक नाना को मान रहे थे।

ऊपरपारा का नाना एक ऐसा युवक था, जो विचारों को महत्व देता था। गाँव की युवा पीढ़ी उसकी अनुयायी हो गई थी। वह कोशिश करता था कि, गाँव के बच्चे पढ़–लिखकर समझदार बनें, पुरानी जर्जर चीज़ों का स्थान नई बातें लें। मगर ये चारों सयाने उसके नाम से ही बिदकते थे, चिढ़ते थे। उनका दावा था, 'कल का पैदा हुआ लड़का, अपनेआप को क्या समझता है!'

उन चार सयानों में शरीर और आय की दृष्टि से सबसे मजबूत था सटवा जी। उसकी उम्र साठ से ऊपर थी। गाँव में उसकी उम्र और अमीरी का दोहरा दबदबा था। वह खुले बदन, कंबल आधा ओढ़कर और आधा अपने पेंदे के नीचे दबाकर बैठा था। उसने अपने घुटने पर अपनी ठुड्डी टेक रखी थी और सामने बैठे केरू की ओर एकटक देख रहा था।

दूसरा सयाना था केरू नलावडा। अपनी झबरी मूँछों पर हाथ फेरते हुए वह सटवा जी को निहार रहा था। केरू एकदम दुबला–पतला था और गला रूँधने तक बोलता ही रहता था। इसलिए लोग उसे 'बातूनी केरू' ही कहते थे। उसका दावा था कि मौत उसे छू नहीं सकती क्योंकि भगवान के घर में उसके जीवनसंबंधी सभी कागजात़ दीमक चट कर गई है। केरू सयाना नंबर दो था।

तीसरा था, भाऊ बाबाजी। उसे सत्तर के पार होकर भी कई साल गुज़र गए थे। उसकी कमर मुड़कर दोहरी हो चुकी थी इसलिए वह किसी सुअर की तरह नीचे मुंडी करके ही चलता और बोलता था। भाऊ सिर पर हाथ धरे बैठा था।

चौथा सयाना शरीर से पहलवान दिखाई देता था। उसकी उम्र तो पैंतीस ही थी मगर दुर्भाग्यवश उसके सभी बाल पककर सफेद हो गए थे और उसे ज़बर्दस्ती इन बूढ़ों की पंक्ति में शामिल किया गया था। गाँव के बच्चे उसे 'बूढ़ाबाबा' कहकर पुकारते थे। वह बेचारा रोज़ ही तरह–तरह की दवाएँ चुपड़कर अपने बालों को काला करने की कोशिशों में लगा रहता था।

तो इसतरह तीन सौ घरों वाले इस गाँव में ये चारों सयाने इकट्ठा होकर दुनिया–जहान की बखिया उधेड़ते रहते थे। कभी वे स्वराज्य की माँग करने वालों की हँसी उड़ाते, 'बेकार मरेंगे, अंग्रेज़ों के राज में कभी सूरज नहीं ढलता।' सिवान से गुज़रने वाली रेलगाड़ी की सीटी सुनकर वे कहते, 'भूतनी के! ये बेकार है! बिना बैल की कोई गाड़ी होती है?'

ऐसे इन सयानों को नाना शैतान का साया लगता था।

अचानक केरू ने कहा, 'सटवू भैया, सुनिये!'

उसकी आवाज़ सुनते ही सभी सयाने चौंककर केरू की ओर देखने लगे। सटवा जी ने अपनी ठुड्डी उसीतरह घुटने पर जमाये हुए पूछा, 'हूँ, क्या है?'

केरू ने कहा, 'मेरे आँख की पलक फड़फड़ा रही है। कोई मरने वाला है!' उसने लम्बी साँस लेकर मृत्यु और अपनी पलक का समीकरण जोड़ते हुए कहा।

'कोई? अरे संकर जंगम ही टें बोलने वाला है। उसे बहुत बुखार है।' सटवा जी ने शंकर जंगम का भविष्य बतला दिया।

'मगर मैं चाहता हूँ कि वह नाना पाटील ही पहले मर जाए!' केरू ने अपनी इच्छा व्यक्त की।

'हाँ हाँ, वाकई वो अलग किस्म का आदमी है। अरे, वह हम सबको बेवकूफ मानता है!' भाऊ बाबाजी ने अपनी ज़बान खोली।

वे चारों धीमी आवाज़ में खुसुरपुसुर कर रहे थे। मांग, महार, चमार, कुम्हार, नाई... समूचा गाँव इकट्ठा हो चुका था। मगर उन्हें इससे कोई लेना–देना न था। वे अपनी अलग खिचड़ी पकाने में इतने मगन थे कि उन्हें पता ही नहीं चला कि उनका दुश्मन नाना भी वहाँ आकर बैठ चुका है।

अंततः नाना उठकर खड़ा हुआ और उसने अपनी दोनों हथेलियाँ जोड़कर माथे से लगाईं और ज़ोर से बोला,

'सटवू बाबा, गाँव के लोग आ गए हैं – सभा शुरु कीजिए।'

नाना की बुलंद आवाज़ से सभी सयाने होश में आए। उन्होंने चारों ओर ध्यान से देखा। सटवा जी ने अपनी आवाज़ चढ़ाते हुए कहा, 'तो तुम ही शुरु करो न!'

'मैं कैसे कर सकता हूँ? आप लोग बड़े हैं।' नाना ने हँसते हुए कहा।

केरू चिढ़कर आँखें तरेरते हुए बोल पड़ा, 'अरे तुम्ही चालू करो। बहुत सयाने जो बनते हो!'

'इसतरह आपस में मत उलझो!' गुरव (पुजारी) ने बीचबचाव करते हुए कहा।

'गाँव में मरीआई घुस चुकी है, पहले इस पर बात करो।' तराल (एक अछूत जाति) ने हाथ जोड़े।

सटवा जी ने गला खँखारकर साफ करते हुए संक्षेप में कहा, ' गाँववालो, गाँव में मरीआई घुस गई है। वह अशुभ है।'

उसे बीच में रोकते हुए केरू कहने लगा, 'मरीआई की गाड़ी इस गाँव में आ गई है। संकरा जंगम सिर के नीचे पंचाँग दबाकर बार–बार हगने जा रहा है और उल्टी कर रहा है – अगर वह संकर मर गया तो आगे पंचाँग कौन बाँचेगा?'

नाना ने ऊँची आवाज़ में पूछा, 'वो तो ठीक है, मगर ये तो बताइये कि हमें करना क्या है!'

नाना की ऊँची आवाज़ सुनकर केरू की जीभ को मानो लकवा लग गया। सटवा जी ने घोषणा की, 'नाना सुन, हमारा मानना है कि गाँव में आज से अगले तीन शुक्रवारों को व्रत करना होगा तभी मरीआई विदा होगी, अन्यथा...'

केरू फिर शुरु हो गया, 'अन्यथा गाँव का कुलकर्णी (पटवारी) भी मर जाएगा, मरघट ले जाने वाला कोई नहीं बचेगा!'

केरू की बात पर नाना ने फिर से पूछा, 'हाँ हाँ, मगर तीन शुक्रवार को व्रत करना है, मतलब क्या करना है?'

'मतलब तीन दिन व्रत करना है रे...' म्हादबा ने होंठों में तम्बाकू दबाते हुए समझाया।

'मगर करना क्या होगा? ये भी तो बताएँ...' नाना ने और ऊँची आवाज़ में पूछा।

'तो सुनो... आज से तीन हफ्ते तक गाँव और सिवान में पूरा चक्काजाम रहेगा!' सटवा जी ने ज़ोर से घोषणा की।

'हाँ हाँ, सब चक्के बंद!' भाऊ ने 'चक्का' शब्द पर ज़ोर दिया।

'ये चक्के बंद होने पर ही मरीआई की गाड़ी के चक्के भी बंद हो सकेंगे।' म्हादबा उर्फ बूढ़ाबाबा ने खड़े होकर खुलासा किया।

'मतलब! गाड़ी और रहँट के चक्के बंद। ये चक्के बंद होते ही मरीआई की गाड़ी के चक्के रूकेंगे।' सटवा जी ने नाना की बात का जवाब दिया।

'यह बात मेरे गले के नीचे नहीं उतर रही है।' नाना ने कहा।

'न उतरे! तुम्हें कोई अकल भी है?' म्हादबा ने उसे घूरा।

'दादा को पोता सिखा रहा है!' भाऊ चीखा।

'बहुत हाशियार बनता है!' केरू ने ताना मारा।

चारों तरफ शोर मच गया। चारों सयाने आरी–पारी से चिल्लाने लगे। सभा मछली बाजार में बदल गई। 'हाँ हाँ, 'नहीं–नहीं', 'अरे चुप करो' हर कोई चिल्ला रहा था। कोई किसी की नहीं सुन रहा था।

अंततः नाना सबकी आवाज़ को दबाते हुए ज़ोर से चिल्लाया, 'ठीक है तो जाँता भी बंद करना होगा।'

सब एकदम चुप हो गए।

अचानक केरू बोल पड़ा, 'अरे, जाँता ज़मीन में गड़ा होता है, उसमें चक्के नहीं होते।'

'नहीं नहीं, ये भी जँचने बाली बात नहीं है।' नाना ने अस्वीकृति में अपने हाथ हिलाते हुए कहा।

फिर सब लोग चुप होकर सुनने लगे।

'तुझे क्यों जँचेगा, तेरा तो दिमाग ही उल्टा है।' भाऊ ने मुंडी नीचे किये–किये ताना मारा।

नाना ने भी चिढ़कर जवाब दिया, 'आप लोगों का दिमाग कितना सीधा है, जानता हूँ।'

फिर शोरगुल मच गया। चारों सयाने बिना किसी की कोई बात सुनें, एक साथ बोलने लगे।

बिर्रा गड़रिया तंग आकर चिल्लाया, 'अरे! मरीआई की बात करनी ज़रूरी है या दिमागों की?'

इस खरे सवाल से सबका दिमाग ठिकाने आ गया। फिर चुप्पी छा गई। सटवा जी ने नाना से पूछा, 'गाँव में घुसी हुई मरीआई को भगाने के लिए आखिर क्या करना चाहिए, तू ही बता।'

नाना शांत होकर कहने लगा, 'चक्का–वक्का बंद करने से कुछ नहीं होगा। हमें समूचे गाँव को झाड़–पोंछकर साफ करना चाहिए। तहसील से दवा लानी चाहिए। डॉक्टर को लाकर टीका लगवाना चाहिए।'

सुनते ही सयाने भड़क उठे। केरू नाना की ओर इशारा कर चिचियाकर चिल्लाया, 'हे भगवान! अब इसके सामने क्या सिर पटका जाए?'

तुरंत भाऊ भी नाना को कनखियों से घूरते हुए चीख पड़ा, 'देखो देखो, सुई टोंचकर ये लोगों को मारना चाहता है!'

सटवा जी ने तो तुरंत धमकी देते हुए कहा, 'नाना मरीआई तेरे डॉक्टर की जान लेने से भी नहीं डरने वाली!'

फिर कोलाहल बढ़ गया। हरेक व्यक्ति कुछ न कुछ बोलने लगा। फिर गुरव ने ज़ोर से गुहार लगाई, 'सुनो सुनो!' सब शांत हो गए। गुरव ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा, 'क्यों न हम नाना की बात भी मान लें और सटवा जी की बात भी मान लें।'

'मतलब क्या करना होगा?'

बिर्रा गड़रिया ने बात का खुलासा करने की माँग की। गुरव ने कहा, 'तीन शुक्रवार को व्रत भी रखा जाए और दवा भी लाई जाए। – मंजूर?'

'मंजूर, मंजूर।' उपस्थित लोगों ने चीखते हुए मुहर लगाई।

'हमें भी मंजूर है।' सटवा जी ने स्वीकृति जताई। मगर तीसरे शुक्रवार को मरीआई की गाड़ी गाँव के बाहर निकालनी होगी। ये भी मंजूर करो।'

सटवा जी की इस बात पर 'यह भी मंजूर है' चिल्लाते हुए सबने गर्दन हिलाते हुए हामी भरी।

सभा समाप्त हुई। लोग उठकर अपने–अपने घर लौटने लगे।

नाना पचास–साठ युवकों के साथ गाँव की साफ–सफाई में जुट गया। उन्होंने पूरे गाँव में झाड़ू लगाई, गौठान साफ किये, गली–कूचे चकाचक कर दिये। उसके बाद नाना फिर सटवा जी के पास पहुँचा।

उसे वापस आता देखकर सटवा जी परेशान हो गया। अब यह क्या नया बखेड़ा खड़ा करेगा, सोचकर ही उसका जी धक–धक करने लगा। नाना पास आकर बोल पड़ा, 'सटवा जी, मैं तहसील जा रहा हूँ।'

'जाओ न!' सटवा जी को राहत महसूस हुई।

'मैं गाड़ी लेकर जा रहा हूँ।'

गाड़ी का नाम सुनते ही बुड्ढा चिढ़ गया। मुश्किल से बढ़ते गुस्से पर काबू पाकर उसने पूछा, 'गाड़ी लेकर जाओगे, तो क्या सिर पर उठाकर ले जाओगे?'

'बिल्कुल नहीं, गाड़ी में बैल जोतकर और उस पर बैठकर जाऊँगा।'

सटवा जी ने बिगड़कर कहा, 'गाड़ी की क्या ज़रूरत है? क्या तहसील से शादी के लिए बारात लानी है?'

'नहीं, बारात नहीं, दवा और डॉक्टर को लाना है।' नाना ने हँसते हुए जवाब दिया।

'डॉक्टर ला या उसके बाप को ला, गाड़ी बिल्कुल जोतने नहीं दूँगा।' सटवा जी ने डाँटते हुए कहा।

'तो डॉक्टर को क्या पैदल लेकर आऊँ?' नाना ने गंभीर होकर पूछा।

'जैसे भी लाना हो ला, पैदल ला या गधे पर बैठाकर ला। मगर गाड़ी जोतने नहीं दूँगा।' सटवा जी ने भड़क कर कहा।

दोनों के बीच बहस होने लगी। देखते ही देखते भीड़ इकट्ठा हो गई। उनकी आवाज़ें ऊँची होने लगीं। चिल्ल–पों मच गई। लोग उन्हें शांत करने की कोशिश करने लगे। केरू नलावडा के आने से बहसाबहसी और तेज़ हो गई।

'मेरी बात तो सुनिये'। नाना ने कहा।

'कोई ज़रूरत नहीं। चक्का बंद।' सटवा जी ने निर्णय दे दिया।

'ठीक है, चक्का बंद...' नाना ने पीछे हटते हुए कहा। सयाने शांत हुए।

नाना ने फिर अपनी बात शुरु की, 'अपने सिवान से रोज़ रेलगाड़ी जाती है। एक मालगाड़ी में साठ डिब्बे लगाए जाते हैं। एक डिब्बे में चार चक्के होते हैं। इसका मतलब, कुल मिलाकर दो सौ चालीस चक्के हैं। पहले उन्हें बंद कीजिये।' नाना ने 'बंद कीजिये' पर अतिरिक्त ज़ोर दिया।

रेलगाड़ी के चक्कों का भयंकर हिसाब सुनते ही सयानों का दिमाग घूमने लगा। वे एकदूसरे का मुँह ताकने लगे। इस बात का क्या जवाब दिया जाए, वे समझ नहीं पा रहे थे।

तभी नाना ने हल्ला बोला, 'देख क्या रहे हैं, उठिये।'

'अरे, इसमें हम क्या करेंगे?' केरू बड़बड़ाया।

'उस गाड़ी को रोकिये।' नाना ने निर्णायक स्वर में कहा।

'अरे, हम उस रेलगाड़ी को कैसे रोक सकते हैं?' सटवा जी ने झुँझलाते हुए कहा।

'चाहे जैसे रोकिये, या खुद सामने लेट जाइये।' नाना ने उन्हें फँसाते हुए कहा।

'लेटकर क्या हम मर जाएँ?' सटवा जी ने पूछा।

'तो क्या मैं डॉक्टर को गधे पर बिठाकर लाऊँ?'

अब जब अपने जान पर बन आई तो सयाने पीछे हटे। नाना बैलगाड़ी लेकर तहसील गया। डॉक्टर और दवा आई और गाँव से बीमारी खत्म हो गई।

मगर वे चारों सयाने यही रट लगाये हुए थे कि तीन शुक्रवार तक व्रत रखने के कारण ही बीमारी हटी है। अब वे कहने लगे कि मरीआई की गाड़ी गाजे–बाजे के साथ गाँव के बाहर ले जानी पड़ेगी। नाना चुप रहा। मरीआई को गाँव की सीमा के बाहर निकालने की तैयारी की जाने लगी।

अंतिम शुक्रवार था। लोगों ने गाँव झंडी–पताकाओं से सजाया। घर–घर में आंबिल–घुघरी (महाराष्ट्र के ग्रामीण पकवान) का भोग लगाया गया। बच्चे–बूढ़े सब खुश थे। सब मरीआई के मंदिर के सामने इकट्ठा हो रहे थे।

बढ़ई ने छोटी–सी गाड़ी बना दी थी, जो मंदिर के सामने खड़ी थी। उसमें मरीआई को बैठाया गया था। औरतें आ–आकर भोग लगा रही थीं, खण (ब्लाउज़ पीस)–नारियल की ढेरी लग गई थी।

बच्चे हुडदंग मचा रहे थे। चारों सयाने गंभीर मुद्रा में गाड़ी वहाँ से आगे बढ़ाने की जल्दबाज़ी कर रहे थे।

गाड़ी की अगुआई करने वाले लोग गर्व से भरे हुए सब को देख रहे थे। उनमें ही एक था नाम्या महार। वह खुले बदन, माथे पर 'भंडारे से मळवट भरकर' (हल्दी–कुमकुम का लेप या परत लगाना) तथा हाथों में नीम की टहनी लेकर तैयार खड़ा था। उसके पीछे परट की बुढ़िया भी बाल छितराकर 'मळवट भरकर' खड़ी थी। उन दोनों पर मरीआई की 'सवारी' आने वाली थी।

सटवा जी, म्हादबा बूढ़ाबाबा, केरू और भाऊ सतर्क थे कि नाना किसी प्रकार की बाधा न पैदा कर दे! वे विजयी नज़रों से देखरेख कर रहे थे।

सूरज सिर पर चढ़ आया। नाम्या आगे–पीछे देखकर ज़ोर से चीख पड़ा। पल भर में उसका समूचा शरीर काँपने लगा और वह नीम की टहनी पटकने लगा। उसका वह भयानक रूप देखकर बच्चे डर गए। केरू ने पुकारा लगाया, 'आ गई, आ गई, सवारी आ गई!' नाम्या पर अब मरीआई की 'सवारी' आ चुकी थी। वह हिलने–डोलने लगा। कराहने लगा। उसके पीछे परट की बुढ़िया भी अजीब आवाज़े निकालते हुए 'झूपने' लगी। अपनी दोनों हथेलियों को सिर के पीछे बाँधकर वह अपने शरीर को झटके देने लगी। नाम्या और बुढ़िया उल्लू जैसी आवाज़ के साथ नाचने–झूपने लगे।

'सवारी आ गई, पीछे हटो', सटवा जी ने लोगों को पीछे धकेलते हुए घोषणा की। मरीआई का गोल–गोल घूमते हुए नाच शुरु हो गया।

बाजे बजने लगे। मांग अपनी 'हलगी' कड़कड़ाने लगा, कैकाड़ी ने अपनी शहनाई आसमान की ओर उठाकर फूँकना शुरु किया और उस्मान आतार अपने नगाड़े की ताल पर मुंडी झटकने लगा। 'डिंगांग डिंक्च्यांग'... बिर्रा धनगर के ढोल की गड़गड़ाहट सबके सिर चढ़कर बोलने लगी। (मांग, कैकाड़ी, धनगर आदि महाराष्ट्र की दलित और पिछड़ी जातियाँ)

'मरीआई की कृपा से सबका भला हो', केरू, सटवा जी, भाऊ और म्हादबा ने जयकारा लगाया। सब लोग उनके साथ जयकारा लगाने लगे। उनकी आवाज़ों से आसमान गूँजने लगा। गाड़ी चलने लगी।

गाड़ी के आगे–आगे नाम्या नाच रहा था। दुलकी चाल से आड़े–टेढ़े कदमों के साथ कूद–फाँद कर रहा था। परट की बुढ़िया अपने सिर को गोल घुमाते हुए, बड़बड़ाते हुए उचकते हुए चल रही थी।

नाना एक टूटी दीवार पर खड़े होकर तमाशा देख रहा था। अचानक रास्ते के बीचोबीच आकर उसने इस जुलूस को रोका, 'अरे SS ज़रा रोकिये।'

बाजे बंद हो गए। देवी की गाड़ी धीमी हो गई। थोड़ी चुप्पी छा गई। मगर सटवा जी ने भड़क कर पूछा, 'अरे ए बेवकूफ! गाड़ी क्यों रोकी?'

'दरअसल मैं पूछना चाहता था कि देवी किस ओर जाएगी?' नाना ने धीमे से पूछा।

सटवा जी ने देवी की दिशा में हाथ जोड़ते हुए पूछा, 'माँ, किस ओर जाओगी?'

'मैंऽ शिरटीऽऽ जाऊँगीऽऽ।' नाम्या पर सवार 'सवारी' ने जवाब दिया। तुरंत परट की बुढ़िया ने भी वही बात दुहरा दी – 'हाँऽ शिरटी जाऊँगीऽऽ।'

'चल बाजू हट।' सटवा जी ने नाना को डाँटते हुए कहा।

मगर नाना ने और नज़दीक आकर ठंडी आवाज़ में पूछा, 'तो हम इस मरीआई को शिरटी की सीमा में छोड़ देंगे और उसके बाद मरीआई के शिरटी में घुसते ही वहाँ उल्टी–दस्त चालू हो जाएगी!'

'तो हम क्या कर सकते हैं?' केरू ने आगे बढ़कर कहा।

नाना ने ऊँची आवाज़ में कहा, 'अरे उस शिरटी गाँव में हमारे गाँव की आठ लड़कियाँ ब्याही हैं, उनका क्या होगा?'

जिनकी लड़कियाँ शिरटी में ब्याह होकर गई थीं, वे तुरंत आगे आकर चिल्लाने लगे, 'नहीं नहीं, मरीआई की गाड़ी शिरटी की ओर बिल्कुल नहीं जाने देंगे।'

अचानक इस नए हमले से हड़बड़ाकर नाम्या पर सवार देवी ने कहा, 'अरेऽऽ बाबा, मैं पाड़ली चली जाऊँगी।'

'मगर देवी माँ, पाड़ली में भी हमारे रिश्तेदार हैं, उनका क्या होगा?' नाना ने हाथ जोड़ते हुए कहा। जिनके रिश्तेदार पाड़ली में थे, अब वे सब शोरगुल मचाने लगे। 'गाड़ी पाड़ली नहीं जाएगी।'
अब उत्तर और दक्षिण दोनों दिशाओं पर रोक लगने के कारण मरीआई और उसके सटवा जी, केरू, भाऊ जैसे नेता फँस गए। अपने–अपने रिश्तेदारों की जान के लिए आधा गाँव नाना के पीछे खड़े होकर चिल्लाने लगा कि 'पाड़ली का नाम मत लेना'। उनकी चिल्ल–पों से गाँव थर्राने लगा।

नाम्या पर सवार मरीआई गर्दन झुकाकर सुनने लगी। चारों सयाने विचारों के डबरे में डूबने–उतराने लगे।

थोड़ी देर बाद मरीआई ने अपना विचार बदलते हुए पुकारा, 'सुनो रे ऽऽ'

सभी लोग शांत हो गए। सयाने भारी खुश हुए।

देवी ने कहा, 'मुझे पच्छिम की ओर जाना है।'

सुनते ही केरू ने एकदम उत्साह से कहा, 'हाँ हाँ, उधर ही चलते हैं।'

सटवा जी ने उसी दिशा में कदम बढ़ाए, 'एकदम सही, चलो।'

नाना बोल पड़ा, 'मगर देवीमाँ, पच्छिम में तो खूबी गाँव है और वहाँ भी हमारे गाँव की ग्यारह लड़कियों की घर–गृहस्थी है!' नाना ने नाम्या के सामने हाथ जोड़ लिये। तभी खूबी के नातेदार दौड़कर आते हुए चिल्लाए, 'खूबी में मरीआई की गाड़ी नहीं जाने देंगे।'

नाम्या पर सवार देवी पीछे हट गई। भयंकर हड़कंप मच गया। समूचा गाँव चीखने–चिल्लाने लगा। कोई कह रहा था, 'खूबी की ओर कदम नहीं बढ़ाना', तो कोई 'पाड़ली नहीं जाने देंगे' कह रहा था, तो कुछ लोग शिरटी का नाम लेकर शोर मचाने लगे।

अब नाम्या ने अपना मोर्चा पूरब की ओर बढ़ाया। परट की बुढ़िया उसके पीछे पाँव घिसटने लगी। सटवा जी, केरू, भाऊ ने तुरंत नारा दिया, 'ठीक है, देवी को पूरब जाने दो।'

इस पर नाना ने चिढ़कर अंतिम वार किया, 'नहीं जाने दूँगा।'

'अरे क्यों नहीं जाने देगा?' भाऊ ने अजीजी से पूछा।

'नाना, नाना, तेरा कभी भला नहीं होगा। तेरे मुँह में कीड़े पड़ेंगे।' केरू ने शाप दिया।

नाना ने गरजते हुए कहा, 'मैं मरने के लिए तैयार हूँ, मगर गाड़ी नहीं बढ़ने दूँगा। पूरब की ओर बिचुत गाँव है, वहाँ भी तो हमारे अठारह परिवार हैं।'

बिचुतवासियों के रिश्तेदार अब शोर मचाने लगे।

मरीआई के लिए अब चारों दिशाएँ बंद हो गईं। सब लोग तू तू–मैं मैं करने लगे। नाम्या पर सवार देवी ने घबराकर अधमुँदी आँखों से आसपास देखा। परट की बुढ़िया तो भागने की सोचने लगी।

बाजे काफी देर से बंद हो चुके थे। उस्मान अपना नगाड़ा पीठ पर चढ़ाकर भीड़ में आगे बढ़ा। बड़ा–भारी ढोल लेकर बिर्रा गड़रिया भी उसके पीछे हो लिया। कैकाड़ी अपनी शहनाई बगल में दबाकर उस शोरगुल करती भीड़ को देख रहा था।

बिर्रा चिल्लाने लगा, 'पाड़ली में मेरी बेटी ब्याही है। गाड़ी नहीं बढ़ेगी।' ढोल बजाने वाली डंडी कमर में खोंसते हुए बिर्रा घूम गया।

गाँव के सयाने नेता भी चिढ़कर चीख रहे थे। भाऊ ने घोषणा की, 'मैं देखता हूँ, कौन माई का लाल रोकता है?'

अचानक एक किसान सोंटा लेकर आते हुए चिल्लाया, 'बढ़ने तो दो पाड़ली की ओर गाड़ी! इस नाम्या का सिर न तोड़ दूँ तो कहना!'

नाम्या दोनों हाथों में सिर थामते हुए वहीं धम्म से बैठ गया। तभी दूसरे ने कहा, 'मारो उसको!'

नाम्या उठते हुए चीखा, 'अरे पर, मुझे क्यों?'

'सवारी उतर गई, सवारी उतर गई!' चारों ओर से आवाज़ें आने लगीं। शोरगुल धीरे–धीरे थमने लगा। अब उस गाड़ी का क्या किया जाए, इस बात पर विचार–विमर्श होने लगा। अंततः गाड़ी से मरीआई को उतारकर पुनः मंदिर में स्थापित कर दिया गया।

पुराने की हार और नए की जीत हुई। उन चार सयानों ने नाना की जीत को कुबूल कर लिया। और उसी दिन से नाना 'नाना पाटील' कहलाने लगा। गाँव ने उसे अपना नेता मान लिया।

.....

अनुवादक : उषा वैरागकर आठले